राजर्षि शाहू महाराज : आधुनिक समाज सुधारक

प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील, न्यू कॉलेज, कोल्हापुर

भारत देश को जाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ग, प्रकृती, आर्थिक, संस्कृती की भिन्नता ने अलगता में एकता की मिसाल बना दिया है। देश के अन्य प्रांतो की तरह महाराष्ट्र के साधु - संत और समाज सुधारकों ने हमारे इतिहास को सजाया और संवारा है। विभिन्न प्रांतों पर अनेक राजा - महाराजाओं ने अपने समय में राज किया है। कुछ लोगों ने तलवार के बल पर और कुछ लोगो ने शांति और अमन से समाज में परिवर्तन के प्रयास किए। उन सभी का इतिहास में अपना अलग महत्व है। भारत वर्ष के इतिहास में ब्रिटिश सरकार की प्रशासन व्यवस्था घोर अंधकार के समान थी। लगभग डेढ़ सौ साल तक अंग्रेज राज में जहां एक तरफ अंग्रेज हमारे देशवासियों का आर्थिक शोषण कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ भारतीय लोगों की मानसिकता पराजित बन चुकी थी। समाज कई सारे अंधविश्वास और गलत रूढी - परंपराओं के चक्रव्यूह में फंसा हुआ था। किसान, नारियां, मजदूर, गरीब इन सब की अवस्था तो अत्यंत दयनीय थी। स्वतंत्रता सेनानी अपने -अपने तरीके से इस देश की आजादी के लिए प्रयास कर रहे थे। इस प्रकार की सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि के परिवेश में महाराष्ट्र राज्य के कोल्हापुर जिले के कागल में होनेवाले घाटगे घराने में दि. 26 जून 1874 में राजर्षी शाहू महाराज जी का जन्म हुआ। इनकी माता का नाम 'राधारानी' और पिता का नाम 'जयसिंगराव' था। इनके के माता - पिता ने अपने बेटे का नाम 'यशवंतराव' रखा था। लेकिन दि.17 मार्च 1884 में कोल्हापुर संस्थान की महारानी आनंदीबाई जी ने 'यशवंतराव' यह नाम बदलकर इनका नाम 'शाहू' रख दिया। दि. 2 अप्रैल 1894 में शाहू महाराज जी ने कोल्हापुर संस्थान का कारोबार अपने हाथ में लिया और जीवन के अंत तक राजसत्ता का उपयोग चैन और विलासिता के लिए न करके संस्थान के जरूरतमन्द लोगों की उन्नति के लिए किया। इसीलिए 1919 में अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा के कानपुर अधिवेशन में शाहू महाराज जी को 'राजर्षि' इस सम्मान से नवाजा गया। राजा होने के बावजूद भी वे किसी ऋषि से कम नहीं थे। समाज के उपेक्षित, वंचित, शोषित, पीड़ित, दलित और नारियों का उद्धार करनेवाले राजर्षि शाहू महाराज लोगों के लिए वे मसीहा ही थे।

समाज व्यवस्था का सूक्ष्म अध्ययन करके आम लोगों के उत्कर्ष के लिए उन्होंने एक से बढ़कर एक योजनाएं बनाई। वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था सामाजिक उन्नति में गतिरोध है, इस बात को पहचान कर विभिन्न जाति - धर्मों के विद्यार्थियों के लिए महाराज ने करवीर संस्थान में बोर्डिंगों की स्थापना की। इसमें प्रमुख रूप से व्हिक्टोरिया मराठा बोर्डिंग, दिगंबर जैन बोर्डिंग, मुस्लिम बोर्डिंग, लिंगायत बोर्डिंग, नामदेव बोर्डिंग, कायस्थ प्रभु बोर्डिंग, सारस्वत बोर्डिंग,पांचाल ब्राम्हण बोर्डिंग, श्री प्रिन्स शिवाजी मराठा बोर्डिंग, दैवज्ञ बोर्डिंग, आर्य समाज गुरुकुल, इंडियन ख्रिश्चन होस्टल, वैश्य बोर्डिंग, ढ़ोर समाज बोर्डिंग, देवांग बोर्डिंग, शाहू वैदिक बोर्डिंग आदि। इसके अलावा संस्थान में प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों की संख्या बढ़ाने के साथ विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियां और पुरस्कारों की भी व्यवस्था की। समाज के दुर्बल वर्गों के लिए शिक्षा और नौकरी में आरक्षण का प्रावधान की गया। विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिले इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र खोले गए तथा लड़कियों की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु राजाराम कॉलेज में पढ़नेवाली छात्राओं की पूरी फीस माफ की गई। महाराज की धारणा थी कि शिक्षा प्राप्ति का अधिकार सिर्फ किसी एक वर्ग की जागीर नहीं बल्कि हर व्यक्ति को शिक्षा के माध्यम से उन्नति का हक है। राजर्षी शाहू महाराज के सामाजिक और शैक्षिक कार्य पर महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शिक्षा के प्रसार के लिए महाराज ने समय-समय पर फरमान निकालकर तथा संस्थान की आयु में से अधिक से अधिक राशि इसी उद्देश्य के लिए खर्च करके समकालीन अन्य संस्थानों के सन्मुख एक मिसाल रख दी थी।

लोकराजा शाहू महाराज जी ने कोल्हापुर संस्थान की खेती के विकास के लिए भी अनेक प्रयास किए। संस्थान में बरसात के पानी का सुव्यवस्थित नियोजन न होने से अकाल की भीषण समस्या का सामना करना पड़ता था। इस समस्या के निवारण के लिए राजा जी ने नए तालाब और कुए खुदवाए तथा पुराने तालाबों को व्यवस्थित करवाया। किसानों को कर्ज के रूप में धनराशि उपलब्ध कराया। कोल्हापुर संस्थान की पंचगंगा, भोगावती, कुंभी- कासारी, तुलसी, दूधगंगा, वेदगंगा, वारणा, ताम्रपर्णी, हिरण्यकेशी इन नदियों का पानी खेती के उपयोग के लिए साल भर मिलता रहे इसका इंतजाम किया गया। राजर्षी शाहू महाराज जी द्वारा बनाया गया राधानगरी डैम संस्थान के किसानों के लिए वरदान से कम नहीं। महाराज चाहते कि किसान अपनी खेती में आधुनिक औजारों का प्रयोग करके उत्पाद बढ़ाएं। खेती के साथ सहकार के विकास के लिए उन्होंने 1912 में कोल्हापुर में नए सरकार कानून को लागू किया। जिसके परिणाम स्वरूप नवीन सहकार संस्थाएं निर्माण होने लगी। 1921 तक कोल्हापुर में 37 सहकार संस्थाएं निर्माण हो चुकी थी।

राजर्षी शाहू महाराज जी ने समाज की कुरीतियों के निवारण के लिए दि.11 जनवरी 1911 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। साथ ही 1917 में उन्होंने विधवा पुनर्विवाह कानून बनाकर विधवाओं का जीवन सुखमय बनाया। वहीं फरवरी 1918 में अंतरजातीय विवाह का कानून बनाकर सामाजिक जाति प्रथा पर गहरा आघात भी किया था। शाहू महाराज बहुत दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी तथा बहुआयामी इंसान थे। प्रगतिशील, गुण ग्राहक, साहसी, दयालु, क्रीडा प्रेमी, कलाओं के आश्रयदाता, शिक्षा के प्रचारक, जातिभेद के निर्मूलनकर्ता, प्रजा के संरक्षण और संवेदनशील मनुष्य होनेवाले राजर्षि शाहू महाराज के अंतर्मन में हर समय प्रजा की हित का ही विचार रहता था। विधाता ने उनको बहुत कम जीवन दिया। दि. 6 मई 1922 को एक दुर्घटना में राजा जी का निधन हुआ। परंतु ईश्वर द्वारा उनको जितना जीवन प्राप्त हुआ उसको सार्थक बनाकर आनेवाली अनेक पीढ़ियों के सामने दीपस्तंभ के समान आदर्श निर्माण करनेवाले आधुनिक समाज सुधारक राजर्षी शाहू महाराज जी को आनेवाली अनेक पीढ़ियां सदैव स्मरण में रखेगी।

संदर्भ सूची:

१) डॉ.जाधव रमेश , शाहू महाराज आणि आपत्ती व्यवस्थापनाचा मानदंड ,सकाळ,२६ जून २०२०

२) डॉ.पवार जयसिंगराव ,राजर्षी शाहू छत्रपती जीवन व कार्य ,तारांराणी बुक सर्विसेस कोल्हापूर प्रथमावृत्ती ,२०१४

३) डॉ. विलास संगवे – राजर्षी शाहू महाराज : कार्य व प्रभाव

४) डॉ. नारायण कांबळे – राजर्षी शाहू : नव्या दिशा, नवे चिंतन

५) डॉ. धनंजय कीर – राजर्षी शाहू छत्रपती

६) लोकराज्य (सप्टेंबर २०१८)